योग-वासिष्ठ का ज्ञान – (2)

" मोक्ष के लिए आत्म-ज्ञान और निष्काम-कर्म, दोनों ही आवश्यक हैं "

- पूर्व काल में सुतीक्ष्ण नामक ब्राह्मण ने महर्षि अगस्त्य से संशय-निवारण के लिए पूछा – "मोक्ष का साधन कर्म है या ज्ञान, अथवा दोनों ही?"
- उत्तर में महर्षि अगस्त्य ने कहा – "हे ब्रह्मन! जैसे दोनों ही पंखों से पक्षियों का आकाश में उड़ना संभव होता है, उसी प्रकार ज्ञान (आत्म-ज्ञान) और कर्म (निष्काम-कर्म) दोनों एक साथ होने से ही परम पद की प्राप्ति होती है; अर्थात मोक्ष के लिए आत्म-ज्ञान और निष्काम-कर्म दोनों ही आवश्यक हैं।"

उभाभ्यामेव पक्षाभ्यां यथा खे पक्षिणां गतिः ।
तथैव ज्ञानकर्मभ्यां जायते परमं पदम् ॥१.१.७॥

-- योग-वासिष्ठ, वैराग्य-प्रकरण, सर्ग-1, श्लोक-7